DAINIK JAGRAN MAR 8, 2013

जीवन की सच्चाई दर्शाते हैं वृत्तचित्र

नौकुचियाताल में शुरू हुआ अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म महोत्सव

अन्तरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में संबोधन करते वरिष्ठ चित्रकार एवं फिल्म निर्देशक।

कार्यक्रम

- 18 देशों के लोग ले रहे हैं भाग
- 11 मार्च तक चलेगा महोत्सव
- पद्मश्री प्रो. शेखर पाठक ने किया शुभारंभ

भीमताल : वृत्तचित्र हमारे जीवन की सच्चाई को दर्शाते हैं। ये हमें सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूक करते हैं। वृत्तचित्र की उपयोगिता उसके निर्माण को लेकर भी है। शब्दों के बाद वृत्तचित्र का निर्माण होता है जिस कारण सम्पूर्ण पटकथा कई वर्षों तक जीवंत रहती है। यह बातें विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार और पद्मश्री प्रो. शेखर पाठक ने कही। श्री पाठक गुरुवार को भारत में पहली बार नौकुचियाताल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र महोत्सव के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। श्री पाठक ने कहा कि साहित्य, पत्रकारिता, चित्र, नृत्य आदि सब डाक्यूमेंट्री है। फिल्म वृत्तचित्र में इन सबका समावेश होता है।

इसके पूर्व श्री पाठक ने सुबह करीब सवा नौ बजे दीप जलाकर महोत्सव का शुभारम्भ किया। इसका आयोजन संस्था फॉर मीडिया (फाउंडेशन फॉर रिस्पॉन्सिबल मीडिया) की ओर से जर्मनी की संस्था डोकेो लिट्ज के सहयोग से किया जा रहा है। यह महोत्सव 11 मार्च तक चलेगा जिसमें 18 वृत्तचित्र प्रदर्शित किए जाएंगे।

समारोह को सम्बोधित करते हुए संस्था फार मीडिया की कोषाध्यक्ष और मुख्य ट्रेनर नीलिमा माथुर ने वृत्तचित्र को अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि वृत्तचित्र किसी भी मुद्दे को संपूर्णता से दर्शाता है। संस्था के अध्यक्ष प्रमोद माथुर ने कहा कि वृत्तचित्र वास्तविकता को दर्शाता है। यह लोगों के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने का एक उन्नत माध्यम है। महोत्सव में अमेरिका, न्यूजीलैंड, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, फिनलैंड और स्वीडन समेत 18 देशों के डायरेक्टर और फिल्म प्रोडक्शन हाउस भाग ले रहे हैं। प्रथम दिन इक प दी फर्गोस, अमेरिकन फिल्म गुड नाइट नो चाउ, स्विट्जरलैंड और जर्मनी से चली ए पीस आफ समर का प्रदर्शन किया गया। मौके पर फिल्म निर्माता मिलन कपूर साहित्यकार डॉ. लक्ष्मण सिंह बटरोही, सईद शेख, राजीव लोचन शाह, फिल्म निर्माता सुदर्शन शाह, आरती कावल, आरनी जौहर, अमीना रोहानी, पीटर स्पैराथैक और भूपेश निधि समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

...जब बापू के आगमन पर बना वृत्तचित्र

नैनीताल में पहली बार 1929 में महात्मा गांधी के कुमाऊं आगमन पर स्थानीय निवासी शाही शाह ने भ्रमण का वृत्तचित्र बनाया था। अंग्रेजी शासन में नैनीताल में बना यह पहला वृत्तचित्र था। इतिहासकार प्रो. पाठक बताते हैं कि पहली बार लोगों ने इस वृत्तचित्र में खादी पहनी महिलाओं को जुलूस के रूप में देखा गया।

बोले विशेषज्ञ, वृत्तचित्र की भी अलग दुनिया है

वृत्तचित्र महोत्सव कई मायनों में प्रेरणा स्रोत व ज्ञानवर्धक है। इसके माध्यम से बाहरी देशों की विभिन्नताओं व समस्याओं के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मिलती है। निर्माताओं को पहाड़ों की झील, बुग्याल, जंगल आदि को भी इसमें शामिल करना चाहिए ताकि इन्हें बचाया जा सके। महोत्सव के द्वारा वृत्तचित्र निर्माता पलायन बाधा को दूर करने का उचित अवसर है।

प्रो. शेखर पाठक पद्मश्री और इतिहासकार

टीवी में आने वाले कार्यक्रम पूरानतया हो गए हैं। ये कार्यक्रम इन दिनों स्टूडियो आदि में बन रहे हैं और आउट डोर शूटिंग का प्रचलन कम होता जा रहा है जिस कारण यह वास्तविकता से दूर होते जा रहे हैं। इस बार मुंबई दंगों के बीस वर्ष बाद एनडीटीवी में टीमसहत जो बने वृत्तचित्र को प्रदर्शित किया गया जो नए निर्माताओं के लिए सुखद है।

आरती, वृत्तचित्र विशेषज्ञ

वृत्त चित्र एक पुल है जो सूचना और मनोरंजन को मिलाता है। उसका प्रभाव वृत्तचित्र लोगों में काफी चर्चित रहता है। आज के दौर में वृत्तचित्र बनाने वाले अधिकांशतः वे लोग हैं जो कहीं न कहीं अपने क्षेत्र और विषय से संतुष्ट नहीं हैं। यही कारण है कि वृत्तचित्र प्रभावशाली बन रहे हैं।

मिलन कपूर, फिल्म निर्देशक

आकाश की घटना को देखने के बाद उसके विभिन्न पहलुओं पर कई विचार उत्पन्न होते हैं। वृत्तचित्र उन विचारों और सोच को दर्शाने का माध्यम है। समस्या प्रधान वृत्तचित्र बनाने और उस पर चर्चा करने पर आत्म संतुष्टि का अनुभव तो होता ही है यह सामाजिक बदलाव की प्रेरणा भी देता है।

आरनी जौहर, वृत्तचित्र निर्माता

बच्चों को प्राथमिक स्तर पर ही वृत्तचित्र निर्माण की बारीकियों से अवगत कराया जाना चाहिए। कार्यशाला और प्रशिक्षण के माध्यम से वृत्तचित्र निर्माण आसान होगा तथा नए आयाम हासिल करेगा।

भूपेश निधि स्कूल संचालिका और वृत्तचित्र विशेषज्ञ

वृत्तचित्र अपनी बात रखने का सशक्त माध्यम और कई समस्याओं का हल भी है। ये लोगों को समस्याओं और कुरीतियों के प्रति जागरूक करते हैं। वृत्तचित्र विचार को शब्दों और दृश्यों में समाहित करता है। इसकी भी अपनी एक अलग दुनिया है। इसका ज्ञान जरूरी भी है।

अमीना रोहानी पत्रकार और संपादक लेखिका